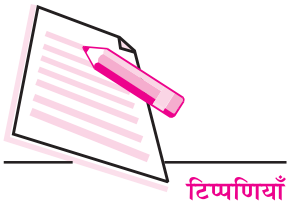

टिप्पणियाँ

13

भारत में पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूप

यात्रा और पर्यटन भारतीय परम्परा और संस्कृति का भाग है। पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह हमारी अर्थव्यवस्था के उभरते हुए पहलुओं में से एक है। इससे बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इससे संरचनात्मक विकास होता है। वैश्वीकरण के युग में यात्रा और पर्यटन की गतिविधियाँ काफ़ी बढ़ गई हैं। संयुक्त राष्ट्र के विश्व पर्यटन संगठन ने भविष्यवाणी की है कि पर्यटन 4% की वार्षिक औसत दर से बढ़ता रहेगा। भारत ने अपनी समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता के आधार पर 'विश्व पर्यटन मानचित्र' पर अपना अलग स्थान बनाया है। भारत में पर्यटन तीसरा बड़ा उद्योग है जिसमें एक करोड़ लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। यह अध्याय भारत में घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन की प्रगति और प्रतिरूपों के वर्णन करने का एक प्रयास है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों में अन्तर करने में सक्षम होंगे;
- पर्यटन का अर्थ तथा इसको प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का वर्णन कर सकेंगे;
- पर्यटन को बढ़ावा देने में पर्यटकों के आकर्षण की भूमिका को पहचान सकेंगे;
- भारत में विदेशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के रुझान को दर्शा सकेंगे;
- घरेलू पर्यटन की प्रगति एवं प्रतिरूप का वर्णन कर सकेंगे;
- पर्यटन उद्योग से हुई कमाई पर चर्चा कर सकेंगे;
- पर्यटन को बढ़ावा देने में सरकार की पहल और प्रयास को उजागर कर सकेंगे।

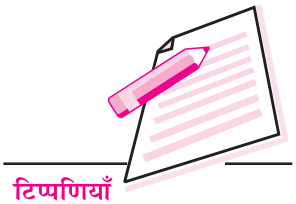

13.1 पर्यटक

हम यह पढ़ चुके हैं कि यात्री और पर्यटक में स्पष्ट अन्तर है। उस व्यक्ति को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक नहीं कहा जाता है जब वह किसी देश में जाता है और वहां उसे कोई कार्य करने को मिल जाता है। उदाहरण के लिए राजनयिकों अथवा सैन्य बलों को पर्यटक नहीं समझा जाता है। इसलिए पर्यटक विभिन्न उद्देश्यों के लिए जाता है जिनमें मनोरंजन, अवकाश, विश्राम, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक विश्वास/आस्था, व्यापार और बिना कोई पारिश्रमिक लिए मित्रों और रिश्तेदारों से मिलना इत्यादि शामिल है।

पर्यटकों को दो स्तरों में रखा जा सकता हैं – घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक: किसी विदेशी पासपोर्ट पर भारत आने वाला व्यक्ति जो कम से कम 24 घंटे भारत में रुकता है। यात्रा का उद्देश्य विश्राम, मनोरंजन, अवकाश, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक आस्था, खेल, परिवार से मिलना, मिशन और बैठक करना हो सकता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति कोई धनोपार्जन नहीं करता तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक कहा जाता है।

घरेलू पर्यटक: कोई व्यक्ति यदि देश के भीतर ही अपने निवास या कार्य स्थल के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर जाता है और 24 घंटे से ज्यादा समय तक किसी आवासीय स्थल में रहता है। उसका उद्देश्य अवकाश, विश्राम, खेल, तीर्थयात्रा, धार्मिक विश्वास, अध्ययन, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्सव होना चाहिए। परन्तु, अपने गांव अथवा पैतृक स्थान पर रिश्तेदारों अथवा मित्रों से मिलने के लिए छुट्टी पर आने वालों अथवा सामाजिक और उत्सव में शामिल होने वालों को पर्यटक नहीं माना जाता है।

13.2 पर्यटकों के लिए आकर्षण

पर्यटन हमारी संस्कृति और परम्पराओं का एक अभिन्न अंग रहा है। भारत को सभी आगन्तुकों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार के लिए जाना जाता है, भले ही वे किसी भी स्थान से आए हों। आगुन्तकों के लिए मैत्रीपूर्ण परम्पराएँ, विभिन्न प्रकार की जीवन शैलियाँ, सांस्कृतिक विरासत, रंगारंग मेले और त्योहार पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्राचीन काल से भारत के भिन्न भागों में शासकों ने आलीशान आरामदेह महलों, अद्‌भुत मन्दिरों, खूबसूरत बागों, ऊंचे किलों तथा मक़बरों का निर्माण किया है। अन्य आकर्षणों में सुन्दर 'समुद्र तट', वन्य जीव, राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी विहार, बर्फ से ढ़ँक क्षेत्र, नदियाँ, पर्वतीय शिखर, प्रौद्योगिक पार्क, विज्ञान संग्रहालय और तीर्थ यात्रा केन्द्र सम्मिलित हैं। हेरिटेज ट्रेन्स, योग, आयुर्वेद, सिद्ध और प्राकृतिक स्वास्थ्य रिसोर्ट भी बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

भारतीय हस्तशिल्प विशेषत: जेवर, कालीन, चमड़े का सामान, हाथी दांत और पीतल का सामान विदेशी पर्यटकों की खरीददारी की मुख्य वस्तुएँ हैं। वे अपनी धनराशि का लगभग 40% अंश इस प्रकार के सामान की खरीददारी पर खर्च करते हैं। प्राकृतिक स्थल और सांस्कृतिक विरासत की सुंदरता भारत को पर्यटकों के लिए स्वर्ग बनाती हैं। इसी कारण से हमने 'अतिथि देवो भव:' (मेहमान भगवान का स्वरूप है) की सांस्कृतिक परम्परा को विकसित किया है जो हमारे सामाजिक

व्यवहार में झलकती है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था 'एक पर्यटक के रूप में स्वागत कीजिए और एक मित्र के रूप में वापस भेजिए'।

पर्यटन के लिए भारत प्राकृतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न देश है। भारत में पर्यटन को दो मुख्य वर्गों में बांटा जा सकता है – प्राकृतिक और सांस्कृतिक।

प्राकृतिक परिदृश्य में सम्मिलित हैं :

पर्वतीय पर्यटन, द्वीपीय पर्यटन, मरूस्थलीय पर्यटन, तटीय पर्यटन, सरोवरीय पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन, साहसिक पर्यटन।

सांस्कृतिक पर्यटन में सम्मिलित हैं:

धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, पारम्परिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, खेल पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन।

उपरोक्त सभी प्रकार के पर्यटन अलग-अलग भागों से घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

13.3 पर्यटन में उभरते आयाम

पारम्परिक पर्यटन के अतिरिक्त नई प्रकार की पर्यटन गतिविधियों का सृजन किया गया है। भारतीय पर्यटन में उभरते आयाम है :

- स्वास्थ्य पर्यटन
- आध्यात्मिक पर्यटन
- साहसिक पर्यटन
- मीटिंग, प्रोत्साहन, सम्मेलन तथा प्रदर्शनी (MICE) पर्यटन
- ग्रामीण पर्यटन
- स्थायी पर्यटन

भारत में स्वास्थ्य पर्यटन कम कीमत पर विश्व स्तरीय इलाज़ प्रदान करता है। इसमें भारतीय पद्धति की चिकित्सा जैसे आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति, यूनानी, सिद्ध और एलोपैथी शामिल हैं। भारतीय चिकित्सकीय पर्यटन विश्व के विकसित देशों जैसे अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व क्षेत्रों से पर्यटकों को आकर्षित करता है जहां इलाज करवाना बहुत महंगा है।

भारत अध्यात्मवाद का केन्द्र है। जहां विभिन्न धर्मों का संगम है जैसे हिन्दू, सिक्ख, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध और जैन। धार्मिक आस्था में विश्वास करने वाले लोगों ने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में कई आकर्षक मन्दिरों, मस्ज़िदों, मठों और चर्चों का निर्माण किया है। ये धार्मिक स्थान बड़ी संख्या

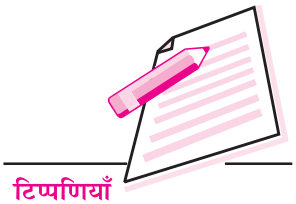

में घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। साहसिक और प्राकृतिक पर्यटन भी आजकल लोकप्रिय हो रहा है। भौगोलिक विविधता भारत को साहसिक पर्यटन के लिए अच्छा स्थान तथा अवसर प्रदान करती है। अधिकतम साहसिक गतिविधियाँ ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में चल रही हैं।

सभाएँ, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनी पर्यटन (Meeting, Incentives, Conferences and Exhibitions; MICE) वर्ष 1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है। अब भारतीय पर्यटन उद्योग व्यापारिक पर्यटकों का स्वागत करने के लिए सभी प्रकार की सुविधाओं से पूरी तरह तैयार एवं सम्पन्न है। ऐसी सुविधाओं तथा संरचनात्मक ढांचे को अभी भी सुधारा जा रहा है तथा उसके लिए निवेश किया जा रहा है।

ग्रामीण पर्यटन में पर्यटकों का स्थानीय लोगों तथा उनके सांस्कृतिक जीवन के साथ परस्पर सम्बन्ध बन जाता है।

स्थायी पर्यटन वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा साथ ही यह भी ध्यान रखा जाता है कि भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने में किसी भी तरह की कमी न हो। इसमें यह भी ध्यान रखा जाता है कि पर्यटन का पर्यावरण के साथ नकारात्मक प्रभाव ज्यादा न हो।

पाठगत प्रश्न 13.1

1. घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर्यटन की व्याख्या कीजिए।
3. MICE, सभाएँ - प्रोत्साहन - सम्मेलन और प्रदर्शनी पर्यटन का वर्णन कीजिए।

13.4 पर्यटन का विकास

पर्यटन देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन स्वभाव से बहुत गतिशील होता है। इसमें स्थान और समय के संदर्भ में परिवर्तित होता रहता है। किसी क्षेत्र में पर्यटन का विकास अनेक कारणों पर निर्भर करता है। पर्यटन का विकास सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकता है। जब पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है तो विकास सकारात्मक होता है। नकारात्मक विकास तब होता है जब पर्यटकों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में घट जाती है। पर्यटकों की संख्या को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक और महामारियाँ इत्यादि।

यात्रा और पर्यटन की गतिविधियाँ मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही चलती रही हैं। यह समय के साथ उतार-चढ़ाव के माध्यम से बढ़ता रहा हैं। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन में वृद्धि की दर बहुत कम थी। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में पर्यटन गतिविधियों, पर्यटकों के आवागमन में तीव्रता से वृद्धि हुई। भारत का विकसित देशों के सामने

खुलेपन के कारण ऐसा हुआ। पर्यटन क्षेत्र में मूलभूत संरचनाओं के विकास में इसकी उत्पत्ति निहित है।

भारत में 1990 के दशक के प्रारंभ से ही पर्यटन में वस्तुतः वृद्धि हो रही है। अमीर देशों की अच्छी वित्तीय स्थिति एवं अवकाश पाने वाले पर्यटकों के छुट्टियाँ बिताने, दर्शनीय स्थल देखने एवं व्यापारिक बैठकों आदि ने पर्यटन उद्योग को काफी बढ़ावा दिया है। गत दशकों में यात्रा और पर्यटन की वृद्धि के मुख्य कारण अच्छी यातायात व्यवस्था, पहुंचने की सुविधा, संचार एवं आवास इत्यादि हैं। 1980 के दशक के बाद भारत में पर्यटन गतिविधियों ने गति प्राप्त की। 1990 में दक्षिण एशिया में पर्यटकों के आने में काफी वृद्धि अंकित की गई। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में भारत एक प्रमुख पर्यटक गंतव्य स्थल है। भारत में आधे से अधिक पर्यटकों का आगमन होता है और दक्षिण एशिया की पर्यटन आय का लगभग 75% भारत को प्राप्त होता है।

किसी देश के पर्यटन सूचकांक को मापने के अनेक तरीके हैं। उनमें से दो तरीके अति महत्वपूर्ण हैं। पहला अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों का आगमन तथा दूसरा पर्यटन से प्राप्त आय। हम भारत में पर्यटन की प्रगति को समझने के लिए पर्यटकों को दो वर्गों में बांट सकते हैं। (अ) विदेशी पर्यटकों का आगमन और (ब) घरेलू पर्यटकों का आगमन।

13.5 पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारक

यात्रा और पर्यटन को प्रोत्साहन देने वाले अनेक कारक हैं। पर्यटन की मूलभूत संरचनात्मक सुविधाओं एवं आधुनिक सेवाओं में वृद्धि ने जीवन को सहज बनाया है एवं अधिक यात्राएँ करने के लिए प्रोत्साहित किया है। परिवहन में सुधार, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी में अत्यधिक परिवर्तनों ने दर्शनीय क्षेत्रों में लोगों के आवागमन को बढ़ाया किया है। किसी भी क्षेत्र में पर्यटन की वृद्धि के लिए उत्तरदायी कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं:

- भौगोलिक
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- सुरक्षा और चौकसी
- आर्थिक स्थिति
- सुविधाएँ और सेवाएँ
- सरकारी नीतियाँ

(i) भौगोलिक

भौगोलिक स्थितियाँ पर्यटकों के प्रवाह को प्रभावित करती हैं। प्रायः गर्म मैदानी क्षेत्र के पर्यटक गर्मी में पर्वतीय क्षेत्रों में ठंढे और मनोहारी मौसम के लिए जाते हैं। ठंढे क्षेत्रों के पर्यटक सर्दी में गर्म क्षेत्रों में जाते हैं। किसी क्षेत्र की अवस्थिति, जलवायु, परिदृश्य और भौगोलिक विविधता बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पर्यटकों की पसंद को ध्यान में रखकर विभिन्न मौसमों में पर्यटकों की संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है।

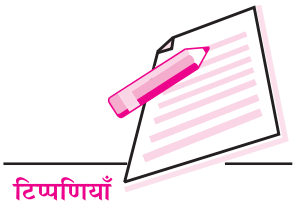

(ii) सांस्कृतिक कार्यक्रम

कुछ सामाजिक गतिविधियाँ जैसे उत्सव, मेले, नृत्य, बैठकें, स्थानीय रीति-रिवाज और धार्मिक अनुष्ठान बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा और उत्तर भारत में होली तथा दीवाली, गोवा में आनन्दोत्सव (कार्नीवाल), गुजरात में डांडिया, राजस्थान में मरूस्थल समारोह, हरियाणा में सूरजकुण्ड मेला, केरल में ओणम, आदि कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैं जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

(iii) सुरक्षा और चौकसी

सुरक्षा और चौकसी पर्यटकों के आगमन में वृद्धि को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। यदि किसी पर्यटक के साथ कोई दुर्घटना होती है तो पर्यटकों के आगमन की संख्या में कमी आ जाती है। प्रत्येक पर्यटक पहले अपनी सुरक्षा चाहता है। कश्मीर घाटी में पर्यटन बहुत कम हो चुका है। यह विशेषत: 1985 के बाद आतंकवादी गतिविधियों के कारण ऐसा हुआ। पर्यटकों का आगमन कश्मीर घाटी की ओर न होकर अन्य राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड की ओर बढ़ गया।

(iv) आर्थिक स्थिति

लोगों की आर्थिक स्थिति भी पर्यटन को प्रभावित करती हैं। ऊंची आय वाले लोग प्राय: निम्न आय वर्ग की तुलना में अधिक यात्रा करते हैं क्योंकि उनकी क्रय शक्ति अधिक होती है। वे यात्रा और पर्यटन पर अधिक खर्च कर सकते हैं।

(v) सुविधाएँ और सेवाएँ

अनेक प्रकार की मूलभूत संरचनात्मक सुविधाएँ और सेवाएँ पर्यटकों के आवागमन को पुरजोर तरीके से निर्धारित करती हैं। इनमें आवास, होटल, पहुंच, यातायात, बैंकिंग सेवाएँ, संचार, बुकिंग, गाईड्स, मनोरंजन की गतिविधियाँ शामिल हैं। इन सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता पर्यटकों को किसी स्थान पर जाने के लिए प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित करती हैं।

(vi) सरकारी नीतियाँ

सरकारी नीतियाँ पर्यटकों के आगमन को बहुत हद तक प्रभावित करती हैं। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार कुछ सब्सिडी, पैकेज, उदार वीज़ा नीति और यात्रा नियमों में ढील दे सकती है। कुछ देशों में पर्यटकों के लिए वीज़ा की जरूरत नहीं होती और गंतव्य देश में पहुंचने पर वे प्राप्त करते हैं। जबकि अन्य देशों में इसे प्राप्त करने की बहुत कठोर शर्तें होती हैं। विभिन्न देशों से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार कुछ प्रदर्शनियाँ आयोजित करती हैं।

13.6 विदेशी पर्यटक आगमन

भारत अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए एक अच्छा आकर्षण है क्योंकि यहां सर्वोत्तम पर्यटन सुविधाएँ सस्ते में उपलब्ध है। वर्ष 1951 में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या मात्र 16829

थी। वर्ष 1981 में यह संख्या बढ़ कर 11.4 लाख हो गई तथा वर्ष 2011 में 63.0 लाख हो गई। अत: पिछले 60 वर्षों में कुल 61.3 लाख विदेशी पर्यटक बढ़ चुके हैं। वर्ष 1951 से 2011 के बीच विदेशी पर्यटकों के आगमन में निरन्तर सकारात्मक वृद्धि रिकार्ड की गई है। वर्ष 1951 से 2010 के बीच भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की दशकीय वृद्धि दर तथा वार्षिक वृद्धि दर को तालिका 13.1 के अंतिम दो कालमों में अच्छी तरह से अध्ययन किया जा सकता है।

तालिका 13.1: भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन : 1951-2010

वर्ष	आगमन	संख्या में सकल वृद्धि	दशकीय वृद्धि दर (%)	वार्षिक वृद्धि दर (%)
1951	16929	-	-	-
1960	123095	106266	631.4	63.14
1970	280821	157726	128.1	12.81
1980	1253694	972873	346.4	34.64
1990	1707158	453464	36.1	3.62
2000	2649378	942220	55.1	5.19
2010	5583746	2934368	110.7	11.07

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर गणना

तालिका 13.2: भारत मे विदेशी पर्यटकों का आगमन (1997-2015)

वर्ष	संख्या (मिलियन्स में)	प्रतिशत
1997	5.50	9.3
1998	5.54	–0.7
1999	5.83	5.3
2000	5.89	1.1
2001	5.44	–7.8
2002	5.16	–5.1
2003	6.71	30.1
2004	8.36	24.6
2005	9.95	19.0
2006	11.75	18.1
2007	13.27	12.9
2008	14.38	8.4
2009	14.37	–0.1
2010	17.91	24.6
2011	19.50	8.9
2012	18.26	–6.3
2013	19.95	9.2
2014	22.33	13.1
2015	23.33	4.4

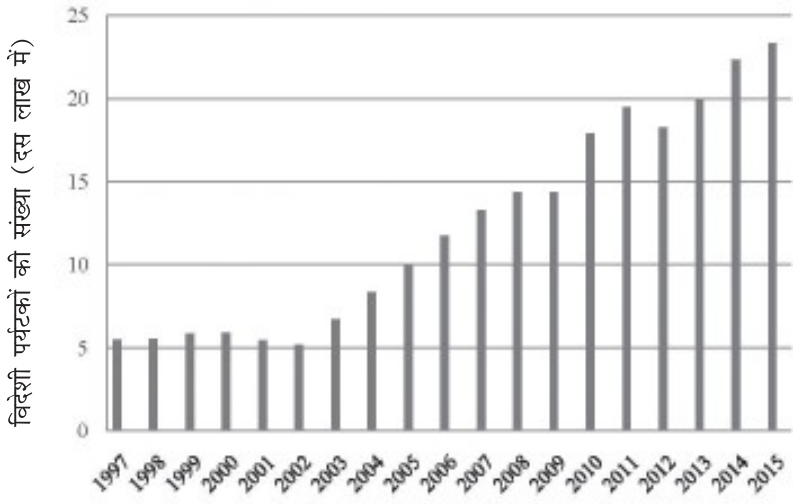

चित्र 13.1: विदेशी पर्यटकों के आगमन का प्रवृत्ति

13.7 विदेशी पर्यटन आगमन का प्रतिरूप

भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। वर्ष 1997 में भारत की विदेशी पर्यटकों में हिस्सेदारी मात्र 0.40% थी। वर्ष 2011 में यह बढ़ कर 0.64% हो गई। वर्ष 2011 में कुल 63.1 लाख विदेशी पर्यटक भारत के विभिन्न पर्यटक स्थलों पर पहुँचे। विश्व पर्यटन में भारत की रैंकिंग 2002 में 54वें स्थान से सुधर कर 2011 में 38वें स्थान पर पहुंच गई। तत्पश्चात वर्ष 2015 में और अधिक सुधार हुई एवं रैंकिंग 24वें स्थान पर आ गया। विदेशी पर्यटकों के प्रारूप की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

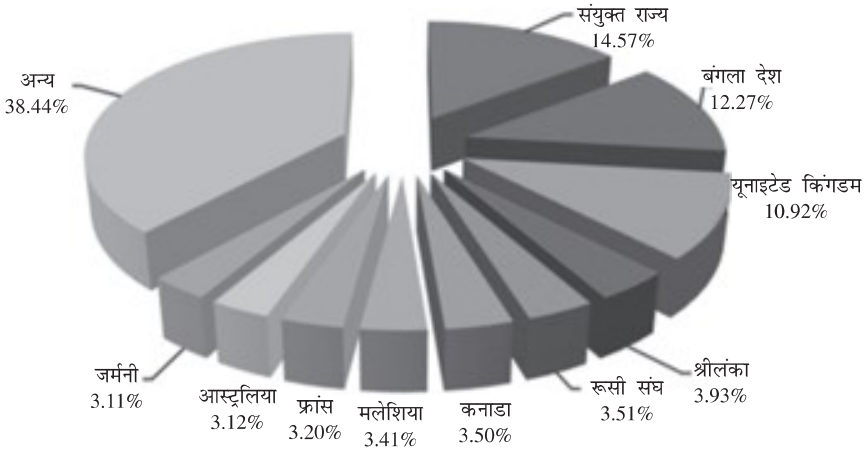

चित्र 13.2: वर्ष 2014 में भारत में चोटी के 10 देशों के पर्यटक आगमन का प्रतिशत

अब वर्ष 2014 में दस बड़े देशों का परिदृश्य वर्ष 2011 के परिदृश्य से बदल गया है। चित्र 13. 2 में संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे अधिक प्रतिशत दर्शाया गया है। यह 14.57% है जिसके

बाद बंगला देश 12.27% पर आता है। युनाईटिड किंगडम 10.92%, श्रीलंका 3.93%, रूसी संघ 3.51% कनाडा 3.50%, मलेशिया 3.41%, फ्रांस 3.20%, आस्ट्रेलिया 3.12%, और जर्मनी 3.11% है। अन्य सभी देशों का हिस्सा 38.44% के बराबर है।

भारत एक कम खर्चीला देश है। इसलिए विदेशी पर्यटक भारत में अधिक समय गुजारते हैं। यह हमारे लिए अच्छा है कि विदेशी पर्यटक यहां एक महीने से अधिक समय तक रुकते हैं। इसका अर्थ है कि भारत विदेशी पर्यटकों के लिए सर्वाधिक पसन्दीदा स्थान है।

तालिका 13.3: 2014 में दस राज्यों/संघीय क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों की संख्या

रैंक	राज्य/संघीय क्षेत्र	संख्या	हिस्सा प्रतिशत में
1	तमिलनाडु	4,657,630	20.6
2	महाराष्ट्र	4,389,098	19.4
3	उत्तर प्रदेश	2,909,735	12.9
4	दिल्ली	2,319,046	10.3
5	राजस्थान	1,525,574	6.8
6	पश्चिम बंगाल	1,375,740	6.1
7	केरल	923,366	4.1
8	बिहार	829,508	3.7
9	कर्नाटक	561,870	2.5
10	हरियाणा	547,367	2.4
	चोटी के दस राज्यों का कुल योग	20,038,934	88.8
	अन्य	2,528,716	11.2
	योग	**22,567,650**	**100**

संभव है कि प्रत्येक वर्ष विभिन्न राज्यों का भ्रमण करने वाले पर्यटकों की संख्या के अनुसार राज्यों की स्थिति बदलती रहे। उदाहरण के लिए वर्ष 2011 में महाराष्ट्र की स्थिति सबसे ऊपर थी जहां विदेशी पर्यटकों की संख्या 24.7% थी। तमिलनाडु दूसरे स्थान पर था। अब तमिलनाडु पहले स्थान पर आ गया है। यह 20.6% है जबकि महाराष्ट्र में 19.4% विदेशी पर्यटक 2014 में पहुँचे। सबसे कम विदेशी पर्यटक हरियाणा में 2.4% पहुँचे।

? क्या आप जानते हैं

दस चोटी के देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका, बंग्लादेश, युनाइटेड किंगडम, श्रीलंका, रूसी संघ, कनाडा, मलेशिया, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और जर्मनी से मिलाकर भारत आने वाले विदेशी पर्यटक 61.54% हैं। प्रतिवर्ष भारत में आने वाले 60 लाख से अधिक विदेशी पर्यटकों की संख्या के बावजूद विदेशी पर्यटकों में हमारा हिस्सा 1% से भी कम है। देश के सभी स्मारकों में से ताज़महल, कुतुब मीनार और आगरा का लाल किला सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

क्रियाकलाप 13.1

कारण खोजिए कि क्यों भारत में सबसे अधिक विदेशी पर्यटक उत्तर अमेरिका तथा यूरोप से आते हैं और सबसे कम अफ्रीका से।

13.8 घरेलू पर्यटकों में वृद्धि

भारत में यात्राओं और पर्यटन का अच्छा इतिहास रहा है। समाज के विभिन्न वर्गों के लोग देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों के भ्रमण के लिए आते हैं। अनेक कारणों से घरेलू पर्यटन बढ़ा है। आय के स्तरों का बढ़ना, क्रय शक्ति और गतिशील मध्यम वर्ग का उदय प्रमुख कारण है। घरेलू पर्यटकों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। विभिन्न राज्यों का भ्रमण करने वाले कुल घरेलू पर्यटकों की संख्या वर्ष 1997 में 1598.8 लाख थी। वर्ष 2007 में यह संख्या बढ़कर 5267 लाख हो गई हैं। दस वर्षों में 3668.8 लाख पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2015 में यह संख्या बढ़कर 14319.7 लाख हो गई। अत: 1997 से 2015 के बीच यह वृद्धि दर 795.65% की रही। यह वृद्धि 41.88% प्रतिवर्ष के हिसाब से बनती है। घरेलू पर्यटकों के भ्रमण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसका विस्तृत विवरण तालिका 13.4 में देखा जा सकता है।

तालिका 13.4: भारत में घरेलू पर्यटकों की संख्या (1997 से 2015)

वर्ष	संख्या (लाख में)	प्रतिशत
1997	159.88	14.1
1998	168.2	5.2
1999	190.67	13.4
2000	220.11	15.4
2001	236.47	7.4
2002	269.60	14.0
2003	309.04	14.6
2004	366.27	18.5
2005	392.04	7.0
2006	462.44	18.0
2007	526.70	13.9
2008	563.03	6.9
2009	668.80	18.8
2010	7477.0	11.8
2011	864.53	15.6
2012	1045.50	20.9
2013	1142.53	9.3
2014	1282.80	12.9
2015	1431.97	11.6

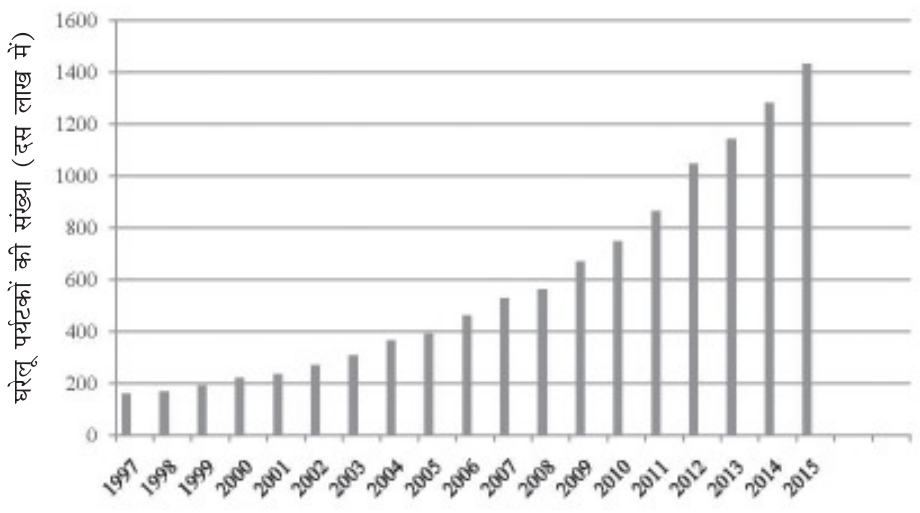

चित्र 13.3: घरेलू पर्यटकों की प्रवृत्ति

उपरोक्त ग्राफ़ (चित्र 13.3) 1997 से 2015 के बीच घरेलू पर्यटकों की वार्षिक वृद्धि को दर्शाता है। वर्ष 1997-2015 के बीच वार्षिक वृद्धि दर 41.88% थी। यह घरेलू पर्यटकों की वार्षिक वृद्धि दर में बढ़ोतरी का स्पष्ट संकेत है। घरेलू पर्यटन में थोड़े उतार-चढ़ाव के साथ निरन्तर वृद्धि हुई है।

घरेलू पर्यटन के स्वरूप

घरेलू पर्यटन का स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट हैं। कुछ राज्य घरेलू पर्यटकों के आगमन की दृष्टि से बहुत आकर्षक हैं। उनमें से तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश एवं कई अन्य राज्य महत्वपूर्ण हैं।

तालिका 13.5: 2015 में चोटी के दस राज्यों/संघीय क्षेत्रों में घरेलू पर्यटकों की संख्या

रैंक	राज्य/संघीय क्षेत्र	संख्या (लाख में)	हिस्सा प्रतिशत में
1.	तमिलनाडु	333.46	23.3
2.	उत्तर प्रदेश	204.89	14.3
3.	आन्ध्र प्रदेश	121.59	8.4
4.	कर्नाटक	119.86	8.4
5.	महाराष्ट्र	103.40	7.2
6.	तेलंगाना	94.52	6.6
7.	मध्य प्रदेश	77.98	5.4
8.	पश्चिम बंगाल	70.19	4.9
9.	गुजरात	36.29	2.5
10.	राजस्थान	35.19	2.5
	शीर्ष के दस राज्य	1197.37	83.6
	अन्य	234.61	16.4
	कुल	**1431.97**	**100.0**

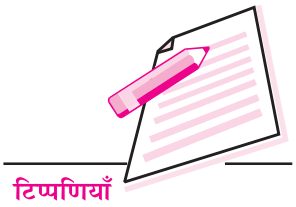

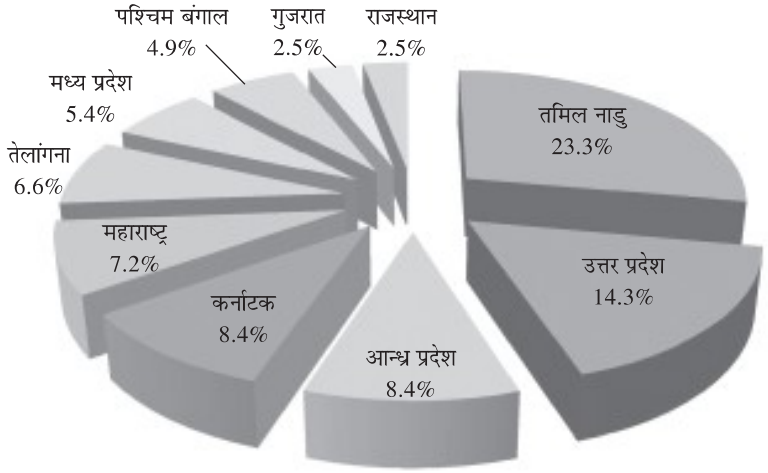

चित्र 13.4: शीर्ष के दस राज्यों/संघीय क्षेत्रों में घरेलू पर्यटकों का प्रतिशत : 2015

चित्र 13.4, वर्ष 2015 के दौरान घरेलू भ्रमण में शीर्ष के स्थान रखने वाले विभिन्न राज्यों/संघीय क्षेत्रों के प्रतिशत भाग और रैंक दर्शाता है। घरेलू पर्यटकों के भ्रमण में 2014 में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले पांच राज्य तमिलनाडु (32760 लाख), उत्तर प्रदेश (18280 लाख), कर्नाटक (11830 लाख), महाराष्ट्र (9410 लाख) और आन्ध्र प्रदेश (9330 लाख) हैं जिनका प्रतिशत का हिस्सा क्रमश: 25.4%, 14.2%, 9.2%, 7.3% और 7.2% है। इन पांच राज्यों में देश के कुल घरेलू पर्यटकों का 63.26% है।

क्रियाकलाप 13.2

1. अपने ज़िले/राज्य के प्रमुख पर्यटक स्थल का भ्रमण कीजिए। उनके मूल स्थान के बारे में सूचना एकत्रित करके पर्यटकों के परिचय का ब्यौरा तैयार कीजिए। घरेलू और विदेशी पर्यटकों के आधार पर प्राप्त सूचना का विश्लेषण करने का प्रयास कीजिए। उन्हें भिन्न-भिन्न राज्यों अथवा देशों के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

2. चिकित्सकीय उपचार के लिए विभिन्न देशों से दिल्ली आने वाले अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को दर्शाने के लिए एक फ्लो चार्ट तैयार कीजिए।

13.9 पर्यटन से आय

पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसमें विदेशी पूंजी अर्जित करने की अद्भुत विशेषता है। यह निरन्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है क्योंकि यह व्यापार में संतुलन बनाए रखने में सहायता करता है। जब कोई पर्यटक पर्यटन सेवाओं अथवा सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए कुछ पैसा खर्च करता है तो यह पर्यटन से प्राप्त आय कहलाती है। अपने गन्तव्य पर पहुंचने से पहले वे अपनी स्थानीय मुद्रा को अमरीकी डालर, यूरो, इंग्लैंण्ड के स्टर्लिंग पौण्ड, जापानी येन, आस्ट्रेलियाई अथवा सिंगापुर डालर में बदलवाता है। गन्तव्य देश में पहुंचने के बाद वे डालर इत्यादि को स्थानीय मुद्रा में बदलवाते

हैं। वर्ष 2011 में पर्यटन से प्राप्त विदेशी मुद्रा आय 16.56 अरब अमरीकी डालर थी जो वर्ष 2010 की आय 14.19 अरब डॉलर की तुलना में काफी अधिक थी। यह 16.7% की वार्षिक दर से वृद्धि हुई। मार्च 2015 में विदेशी मुद्रा विनिमय 1.662 अरब डॉलर थी जबकि मार्च 2014 में यह 1.674 अरब डॉलर थी। विदेशी मुद्रा विनिमय की वृद्धि दर 0.7% पहुँच गई।

वर्ष 1997 में विश्व पर्यटन आय में भारत का हिस्सा 0.64% था और वर्ष 2002 में यह 0.72% हो गया। इसके पश्चात इसमें बड़ी तेजी से वृद्धि हो रही है तथा यह 2011 में बढ़कर 1.61% हो गया।

जनवरी–अप्रैल 2013 में विदेशी विनिमय से आय 6.878 अरब अमेरिकन डालर थी जो 2012 की इसी अवधि में 6.145 अरब अमेरिकन डालर थी। यह 0.603 अरब अमरीकी डॉलर की वृद्धि थी। यह चार महीने के समय में 9.61% की वृद्धि दर हो जाती है। मार्किट सर्वेक्षण शोध के अनुसार भारतीय पर्यटन की विदेशी विनिमय आय 2010–2015 में 7.9% की वार्षिक चक्रवृद्धि दर से बढ़ने की उम्मीद है।

? क्या आप जानते हैं

घरेलू पर्यटकों का लगभग दो तिहाई (63.3%) भारत के पांच राज्यों तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश से आते हैं।

13.10 पर्यटन को बढ़ावा देने में सरकार के प्रयास

देश में पर्यटन को बढ़ाने में केन्द्रीय और राज्य सरकारें अनेक प्रयास कर रही हैं। वर्ष 1949 में परिवहन मंत्रालय के अंतर्गत एक पर्यटन शाखा स्थापित की गई थी। परन्तु वर्ष 1957 में एक अलग पर्यटन विभाग तथा 1958 में पर्यटन विकास परिषद का गठन किया गया। इसने देश में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ाने में बहुत सहायता की। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में पर्यटन के विकास को नियोजित ढंग से शुरू किया गया। छठी पंचवर्षीय योजना में पर्यटन बड़ी तेजी से बढ़ा। सरकार द्वारा समय-समय पर उठाए गए कदमों के कारण देश में पर्यटकों का आगमन निरंतर बढ़ता रहा।

वर्ष 1982 में एक नयी पर्यटन नीति की घोषणा की गई जिसने एक नई दिशा निर्धारित की। भारत सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ तैयार की गई। भारत सरकार द्वारा सातवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया। बाद में वर्ष 1988 में मोहम्मद युनुस की अध्यक्षता में पर्यटन पर बनी राष्ट्रीय कमेटी ने पर्यटन में स्थायी विकास प्राप्त करने के लिए एक व्यापक योजना तैयार की। इस कमेटी की तैयार की गई रिपोर्ट को भारतीय पर्यटन में नींव का पत्थर कहते हैं। वर्ष 1992 में राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की गई थी जिसमें पर्यटकों के आगमन तथा विदेशी विनिमय में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्त करने की रणनीतियाँ शामिल थीं।

वर्ष 1996 में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय रणनीति का प्रारूप बनाया गया। 14 मई 2000 को सरकार ने पर्यटन मंत्रालय को एक अलग मंत्रालय घोषित किया और तब से सरकार

भारत में पर्यटन को प्रभावशाली ढंग से प्रोत्साहित करने के लिए कार्य कर रही है। पर्यटन को सुचारू बनाया गया और टूर-ऑपरेटरों तथा ट्रैवल एजेन्ट्स को स्वीकृति एवं अनुमति प्रदान करने के नियमों को सरल बनाया गया। वर्ष 2010 के संघीय बजट में भारत सरकार ने पर्यटन मंत्रालय को देश में पर्यटन गतिविधियाँ बढ़ाने के लिए 1000 करोड़ रूपये से भी ज्यादा की राशि आबंटित की।

पाठगत प्रश्न 13.2

1. पर्यटन की वृद्धि को परिभाषित कीजिए।
2. भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन का स्वरूप क्या है?
3. भारत का कौन-सा राज्य घरेलू पर्यटन में उल्लेखनीय योगदान देता है?

आपने क्या सीखा

- पर्यटक किसी स्थान का अनेक उद्देश्यों से भ्रमण करता है जिनमें मनोरंजन, अवकाश, विश्राम, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक विश्वास, व्यापार, दोस्तों और रिश्तेदारों से बिना किसी कमाई के उद्देश्य से मिलना शामिल होता हैं।
- भारत में सभी प्रकार के पर्यटन को दो मुख्य वर्गों प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य आधारित पर्यटन में बांटा जा सकता है।
- पर्यटन का स्वरूप अति गतिशील है जो भूसतह पर तथा समय के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।
- किसी क्षेत्र या प्रदेश में पर्यटन में वृद्धि कई कारणों पर निर्भर करती हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, महामारियाँ इत्यादि जैसे अनेक कारक पर्यटकों के आगमन को प्रभावित करते हैं।
- घरेलू पर्यटन में वृद्धि अनेक कारणों पर निर्भर करती है। लेकिन बहुत महत्वपूर्ण कारणों में आय के स्तर, क्रय शक्ति तथा गतिशील मध्य वर्ग का उदय शामिल है।
- घरेलू पर्यटकों में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2001-2011 तक दशकीय वृद्धि दर 260% थी जबकि वर्ष 1997-2011 में यह 432% थी।
- देश में शीर्ष के दस राज्य घरेलू कुल पर्यटकों का 85% का योगदान देते हैं। घरेलू पर्यटकों का लगभग दो तिहाई (63.3%) केवल पांच राज्यों - उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र से आता है।

- जब कोई पर्यटक पर्यटन सेवाएँ और सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए पैसा खर्च करता है तो इसे पर्यटन से प्राप्त आय कहते हैं। वर्ष 2011 में पर्यटकों से विदेश विनिमय आय 16.56 अरब अमरीकी डालर थी जो वर्ष 2010 में 14.19 अरब अमरीकी डालर थी। यह 16.7% वार्षिक वृद्धि दर दर्शाती है।
- देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय और राज्य सरकारें अनेक प्रयास कर रही हैं। पर्यटन को सुचारू बनाया गया है और टूर-आपरेटरों तथा ट्रेवल एजेन्टों को स्वीकृति एवं अनुमति देने के नियमों को सरल बना दिया गया है।
- किसी क्षेत्र में पर्यटन की वृद्धि के लिए उत्तरदायी कुछ कारकों जैसे- भौगोलिक, सांस्कृतिक, सुरक्षा, आर्थिक, सुविधाएँ, सेवाएँ तथा सरकारी नीतियाँ हैं।
- भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन निरन्तर बढ़ रहा है। वर्ष 1951 से 2014 तक इसमें तीव्र वृद्धि थी। वर्ष 1951 में विदेशी पर्यटकों की संख्या मात्र 16,829 थी।
- वर्ष 2011 में यह बढ़कर 6.30 लाख हो गई।
- वर्ष 2014 तक यह संख्या बढ़ कर 74 लाख हो गई। वर्ष 2015 की ट्रैवल एण्ड टूरिज्म कम्पीटीटिवनेस रिपोर्ट ने भारत को 141 देशों में 52 वें स्थान पर रखा था।
- भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय अनेक राष्ट्रीय नीतियाँ बनाता है। इसके अतिरिक्त मंत्रालय भिन्न स्टेकहोल्डर्स (हित धारकों) तथा निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों से परामर्श एवं सहयोग भी करता है।
- पर्यटन के नए रूपों जैसे ग्रामीण, समुद्री पर्यटन, चिकित्सा एवं पर्यावरणीय पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'अतुल्य भारत' अभियान भी है।
- शीर्ष के दस देशों से भारत आने वाले पर्यटक 61% है। इन दस देशों में संयुक्त राज्य अमेरीका, बंगलादेश, युनाइटेड किंग्डम, श्रीलंका, रूसी संघ, कनाडा, मलेशिया, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और जर्मनी शामिल हैं।
- वर्ष 2014 में विदेशी पर्यटकों की आगमन संख्या में भारत के राज्यों तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान का अधिक भाग था तथा सबसे कम हरियाणा में मात्र 2.4% था।

पाठांत प्रश्न

1. भारत भ्रमण पर आने वाले विदेशी पर्यटकों की वृद्धि और स्वरूप पर चर्चा कीजिए।
2. पर्यटन की वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।
3. पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का मूल्यांकन कीजिए।

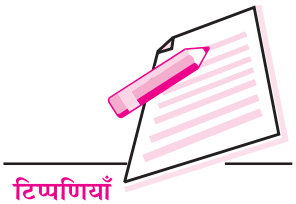

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. कोई व्यक्ति अपने देश के भीतर ही अपने निवास अथवा कार्य स्थान के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर जाता है और 24 घंटे से ज्यादा समय तक किसी आवासीय स्थल में रहता है तो उसे घरेलू पर्यटक कहते हैं। विदेशी पर्यटक वह व्यक्ति होता है जो किसी विदेशी पासपोर्ट पर भारत भ्रमण के लिए आता है और कम से कम 24 घंटे भारत में रहता है। आगमन का उद्देश्य अवकाश, विश्राम, खेल, तीर्थ–यात्रा, धार्मिक विश्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य चिकित्सा और सामाजिक समारोह होना चाहिए। किसी प्रकार की नौकरी/कार्य करना और बदले में वेतन/पारिश्रमिक प्राप्त करना नहीं होना चाहिए।

2. प्राकृतिक परिदृश्य में पर्वतीय पर्यटन, द्वीपीय पर्यटन, मरूस्थलीय पर्यटन, तटीय पर्यटन, सरोवरीय पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन, साहसिक पर्यटन शामिल हैं। सांस्कृतिक परिदृश्य में धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, पारम्परिक पर्यटन, स्वास्थ्य एवं चिकित्सकीय पर्यटन, खेल और ग्रामीण पर्यटन शामिल हैं।

3. MICE का अर्थ है मीटिंग्स्, इन्सेन्ट्विस, कांफ्रेसिस और एक्जीवीशन्स। पर्यटन क्षेत्र में यह रुझान तेजी से उभर रहा है, विशेष रूप से वर्ष 1991 के बाद जब भारतीय अर्थव्यवस्था को उदार बनाया गया। चिकित्सकीय पर्यटन भी तेजी से उभरता क्षेत्र है क्योंकि यहां उपचार और देखभाल सस्ती एवं प्रभावकारी है।

13.2

1. पर्यटन में वृद्धि सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकती है। सकारात्मक वृद्धि तब होती है जब पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती है। नकारात्मक वृद्धि तब होती है जब पर्यटकों की संख्या पिछले वर्ष की संख्या की अपेक्षा कम हो।

2. वर्ष 2014 में शीर्ष के दस देशों से भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या का अमेरिका से 14.57% था जबकि बांग्लादेश से आने वाले 12.27% पर्यटक थे।

3. घरेलू पर्यटन में तमिलनाडु राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है।